7

मसीह के जीवन के समन्वय का अध्ययन करना

हम सुसमाचार के मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना के वृत्तांतों का अध्ययन आरम्भ करते हैं। जैसा कि आप देखेंगे कि इस पुस्तक में अध्ययन किए जाने वाले समन्वय का भाग पहले दिया गया है। शेष पुस्तक में उस पाठ से जुड़ी बाइबल की एक और प्रस्तुति के साथ विकल्प के तौर पर पढ़ने के लिए दिए कार्य के आधार पर एक पाठ है। समन्वय के हर भाग को प्रवचन के रूप में बताने का प्रयास किया गया है। इसमें हमारे दो उद्देश्य हैं (1) प्रत्येक पाठ को हर तरह से दिलचस्प बनाने की कोशिश करना और (2) समझाना कि बाइबल की बड़ी पुस्तकों की जल्दी से समीक्षा कैसे की जा सकती है। मसीह के जीवन की पूरी शृंखला में यही ढंग अपनाया गया है।

यह आप के लिए रोमांचित करने वाला अध्ययन है। मसीह के जीवन पर विचार के लिए हम काफ़ी समय देंगे। उसने हमें ''एक आदर्श'' दे दिया है ताकि हम ''उसके चिह्न पर'' चलें (1 पतरस 2:21), और हम अपने प्रभु के कदमों के चिह्नों को ही ढूंढ़ें।

समन्वय

I. अपनी सेवकाई से पूर्व मसीह के जीवन का काल।
   क. लूका की भूमिका और समर्पण (लूका 1:1-4)।
   ख. यूहन्ना में परिचय (यूहन्ना 1:1-18)।
   ग. मत्ती में यीशु की वंशावली (मत्ती 1:1-17)।
   घ. लूका में यीशु की वंशावली (लूका 3:23-38)।
   ङ. यूहन्ना बपस्तिमा देने वाले के जन्म की जकरयाह के पास स्वर्गदूत द्वारा घोषणा (लूका 1:5-25)।
   च. यीशु के जन्म की मरियम के पास स्वर्गदूत द्वारा घोषणा (1:26-38)।
   छ. मरियम (यीशु की होने वाली मां) का इलिशबा (यूहन्ना बपस्तिमा देने वाले की होने वाली मां) के पास जाना (लूका 1:39-56)।
   ज. यूहन्ना बपस्तिमा देने वाले का जन्म और प्रारम्भिक जीवन (लूका 1:57-80)।
   झ. यीशु के आने की यूसुफ के पास घोषणा (मत्ती 1:18-25)।
   ञ. यीशु का जन्म (लूका 2:1-7)।
   ट. चरवाहों के पास यीशु के जन्म की घोषणा (लूका 2:8-20)।
   ठ. यीशु का खतना और नामकरण; मंदिर में (लूका 2:21-39)।
   ड. पूर्व से आए ज्योतिषियों (''पण्डितों'') का यीशु के दर्शन के लिए आना (मत्ती 2:1-12)
   ढ. मिस्र में जाना व बैतलहम में बच्चों का मारा जाना (मत्ती 2:13-18)।
   ण. बालक यीशु को मिस्र से नासरत में लाया गया (मत्ती 2:19-23; देखें लूका 2:39ख)।
   त. यीशु का नासरत में रहना; बारह वर्ष की आयु में यरूशलेम में जाना (लूका 2:40-52)।

II. यूहन्ना बपस्तिमा देने वाले की सेवकाई का आरम्भ।
   क. यूहन्ना की सेवकाई (मत्ती 3:1-6; मरकुस 1:1-6; लूका 3:1-6)।
   ख. यूहन्ना का संदेश (मत्ती 3:7-12; मर. 1:7, 8; लूका 3:7-18)।

III. यीशु की सेवकाई का आरम्भ।
   क. यूहन्ना से यरदन नदी में यीशु का बपस्तिमा (मत्ती 3:13-17; मरकुस 1:9-11; लूका 3:21, 22; यूहन्ना 1:31-34)।
   ख. जंगल में यीशु की परीक्षा हुई (मत्ती 4:1-11; मर. 1:12, 13; लूका 4:1-13)।

ग. यीशु के विषय में यूहन्ना की गवाही (यूहन्ना 1:19-34)।
घ. यीशु के प्रारभिक चेले (यहूदिया में) (यूहन्ना 1:35-51)।
ड. यीशु का पहला आश्चर्यकर्म (काना गलील में)(यूहन्ना 2:1-11)।
च. कफरनहूम में यीशु का पहला ठिकाना (गलील में) (यूहन्ना 2:12)।

IV. पहले से दूसरे फसह तक।
क. यीशु का सेवकाई का पहला फसह।
1. मंदिर को शुद्ध करना (यूहन्ना 2:13-25)।
2. नीकुदेमुस को सिखाना (यूहन्ना 3:1-21)।
ख. यहूदिया में प्रथम सेवकाई (और यूहन्ना की और गवाही) (यूहन्ना 3:22-36)।